(पृष्ठ-20 का शेष...)

शिष्य के इस आश्चर्य को देखकर आचार्य पूज्यपाद स्वामी आगामी 43 वीं गाथा में उसका समाधान करते हुये कहते हैं कि हे बुद्धिमान ! तू सुन !

यो यत्र निवसन्नास्ते स तत्र कुरुते रतिं।
यो यत्र रमते तस्मादन्यत्र स न गच्छति ।।43 ।।

जो जहाँ निवास करता है, वह वहाँ रति करता है और जो जहाँ रमता है, वह वहाँ से अन्यत्र नहीं जाता। उसे वहीं अच्छा लगने लगता है। उसका मन भी वहीं लगने लगता है; फिर वह जीव उससे दूर नहीं होता।

जगत में भी हम देखते हैं कि कोई व्यक्ति किसी झोपड़ी में वर्षों से रह रहा हो तो उसे वह झोपड़ी इतनी अच्छी लगने लगती है कि उसे छोड़कर वह अन्यत्र जा ही नहीं सकता। अन्यत्र जाये तो भी वहाँ रहने में उसका मन नहीं लगता।

हमारे उमराला गाँव में एक व्यक्ति को परिस्थितिवश अपना मकान बेचना पड़ा। कुछ दिनों पश्चात् पैसा प्राप्त हुआ तो उसकी माँ ने कहा, बेटा ! अपना पुराना मकान वापिस ले लो; फिर उसने पन्द्रह सौ रुपये में बेचा हुआ मकान दस हजार रुपये में वापिस लिया। इस प्रकार जो जहाँ वर्षों से रह रहा होता है, उसका मन वहीं लगता है, वह उससे हटता नहीं है।

यही बात आचार्य उदाहरण से समझा रहे हैं कि जो मनुष्य जिस नगर में अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिए बंधुजनों के आग्रह से निवासी बनकर रहने लगता है, वह उसमें ही आनंद मानता है अर्थात् उसे वहीं पर अच्छा लगने लगता है, वह उस स्थान को छोड़कर अन्यत्र जाना पसन्द नहीं करता। ऐसा अनुभव जगत के जीवों को होता ही रहता है।

उसीप्रकार आत्मा में रहने वाले योगियों को पूर्व में कभी भी निजात्मा का ऐसा अनुभव नहीं हुआ; किन्तु अब निजात्मा के ध्यान से अपूर्व आनन्द की प्राप्ति हुई है, इसलिए योगी पुरुष आत्मा के अतिरिक्त अन्य कहीं पर भी लीन नहीं होते। उनका और कहीं मन नहीं रमता। **(क्रमशः)**

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 26 289 अंक : 1

प्रवचनसार कलश पद्यानुवाद

(मनहरण कवित्त)

इसप्रकार जो प्रतिपादन के अनुसार।
एक होकर भी अनेक रूप होता है।।
निश्चयनय से तो मात्र एकाग्रता ही।
पर व्यवहार से तीनरूप होता है।।
ऐसे मोक्षमार्ग के अचलालम्बन से।
ज्ञाता-दृष्टाभाव को निज में ही बाँध ले ।।
उल्लसित चेतना का अतुल विलास लख ।
आत्मीकसुख प्राप्त करे अल्पकाल में ।।१६।।
इसप्रकार शुभ उपयोगमयी किंचित् ही।
शुभरूप वृत्ति का सुसेवन करके।।
सम्यक्प्रकार से संयम के सौष्टव से।
आप ही क्रमशर निरवृत्ति करके ।।
अरे ज्ञानसूर्य का है अनुपम जो उदय।
सब वस्तुओं को मात्र लीला में ही जान लो ।।
ऐसी ज्ञानानन्द दशा एकान्ततः ।
अपने में आपही नित अनुभव करो ।।१७।।

ह्न डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

स्वरूप लीन योगी को कोई विकल्प नहीं

पूज्यपाद आचार्य श्री देवनन्दिस्वामी के प्रसिद्ध ग्रन्थ इष्टोपदेश के 42 वें श्लोक पर हुए आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरसगर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। मूल श्लोक इसप्रकार है ह्न

किमिदं कीदृशं कस्य कस्मात्क्वेत्यविशेषयन्।
स्वदेहमपि नाऽवैति योगी योगपरायणः ।।42।।

योग परायण (ध्यान में लीन) योगी यह क्या है ? कैसा है ? किसका है ? क्यों है ? कहाँ है ? इत्यादि भेदरूप विकल्प नहीं करता हुआ अपने शरीर को भी नहीं जानता। (अर्थात् उसको अपने शरीर का भी ख्याल नहीं रहता।)

(गतांक से आगे ..)

आनन्दानुभव में एकाग्र योगी को जब शरीर का ही विकल्प नहीं उठता, तब शरीर से भिन्न अन्य वस्तुओं के प्रति विकल्प कैसे उठ सकता है ?

जिन्हें शरीर की ही चिन्ता नहीं ह्न ऐसे मुनिराजों को वन-जंगल में कंकड चुभे, हवा (पवन) आदि की प्रतिकूलता हो, सिंह-बाघ का भय सताये अथवा ध्यान योग्य स्थान उपलब्ध न हो तो भी किसीप्रकार का विकल्प नहीं उठता।

इसी बात को तत्त्वानुशासन के 172 वें श्लोक में स्पष्ट करते हुये कहा है कि ''भगवान आत्मा के अतीन्द्रिय आनन्दस्वरूप लड्डू का जो अनुभव करते हैं ह्न ऐसे आत्म स्वरूप को देखनेवाले योगी को बाह्य पदार्थों की उपस्थिति होने पर भी अन्तर एकाग्रता की अधिकता के कारण परपदार्थों का ख्याल ही नहीं रहता।'' देखो ! बाह्य पदार्थ नहीं है ह्न ऐसा नहीं। बाह्यपदार्थों की उपस्थिति तो है; किन्तु वे अपनी अस्ति में हैं और आत्मा में उनकी नास्ति है।

कुछ अन्यमति लोग जीव की मुक्ति ज्योति में ज्योति मिल जाने पर मानते हैं; किन्तु ऐसी मान्यता से जीव को त्रिकाल मुक्ति नहीं है। इससे तो जीव की स्वयं की सत्ता का नाश होता है। ज्योति में ज्योति मिल जाये और मुक्ति हो ह्न ऐसा कभी नहीं होता। मोक्ष में तो प्रत्येक जीव की स्वतंत्र सत्ता है। स्व-स्वरूप की शून्यता कभी

किसी को नहीं होती। प्रत्येक पदार्थ स्व-स्वभाव से अशून्य और परस्वभाव से शून्य है ह्न ऐसा ही स्व-परपदार्थों का यथार्थ स्वभाव है।

आनंद का पिण्ड प्रभु अस्तिस्वरूप है और उसमें एकाग्र होने पर स्व-स्वभाव में विकल्पों की नास्ति हो जाती है; इसप्रकार शुद्धता के प्रगट होने का नाम संवर-निर्जरा है।

यहाँ कहते हैं कि बाह्य पदार्थों की उपस्थिति होने पर भी आत्मा में एकाग्र होने पर योगी को किसी पदार्थ का ख्याल नहीं रहता। यहाँ अद्वैतब्रह्म जैसी कोई बात नहीं है कि जगत में कोई पदार्थ है ही नहीं; एक मात्र ब्रह्म ही है। यदि ऐसा हो तो आत्मा का अस्तित्व ही न रहे।

अहो ! यह धर्मकथा तो अमृतकथा है। इसके माध्यम से योगी अपनी आत्मा में विश्राम करते हुए संसार की थकावट को दूर करते हैं। अरे भाई ! निजात्मा में तो अपूर्व विश्राम मिलता है; अत: आत्मा ही वास्तव में विश्रामधाम-मोक्षधाम है। योगी जीव ऐसे विश्रामधाम में जब एकाग्र होते हैं, तब उन्हें शरीर का भी लक्ष नहीं रहता; फिर अन्य वस्तुओं का लक्ष कहाँ से रहेगा ? आत्मा कैसा है ? कहाँ रहता है ? कौन है ? इसके यथार्थ निर्णयपूर्वक निजात्मा में एकाग्र होने पर उन्हें अन्य बातों का विकल्प नहीं होता।

गाथा का सारांश यह है कि आत्मस्वभाव की दृष्टिपूर्वक उसमें लीनता करने से योगी पुरुष को विशेष संवर-निर्जरा होती है। जो स्वरूप में लीन हैं ह्न ऐसे योगियों को किसी भी जाति का विकल्प नहीं आता।

इसप्रकार इष्टोपदेश शास्त्र में 42 वीं गाथा पूर्ण हुई।

आचार्य पूज्यपादस्वामी की इस बात को सुनकर शिष्य आश्चर्य व्यक्त करते हुये कहता है कि अहो ! योगी की ऐसी दशा कैसे हुई है ? ऐसी दशा का कारण क्या है ? योगी की ऐसी विलक्षण अवस्था कैसे हो गई है ? वह अपने स्वरूप में ही लीन क्यों रहता है ? उसका लक्ष बाहर की ओर क्यों नहीं जाता ? **(शेष पृष्ठ - 4 पर ..)**

आत्मा किसका कर्त्ता-भोक्ता है ?

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार की 19 वीं गाथा पर हुए आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है ह्न

दव्वत्थिएण जीवा वदिरित्ता पुव्वभणिदपज्जाया।
पज्जयणएण जीवा संजुत्ता होंति दुविहेहिं ।।

द्रव्यार्थिकनय से जीव पूर्वकथित पर्याय से व्यतिरिक्त है; पर्यायार्थिकनय से जीव उस पर्याय से संयुक्त है। इसप्रकार जीव दोनों नयों से संयुक्त है।

(गतांक से आगे)

पहले अकेली विभावव्यंजनपर्याय को पर्यायनय में परिगणित किया था और यहाँ अशुद्धता को भी साथ ले लिया है। जिसप्रकार भगवान को वर्तमान शुद्धता होने पर भी भूतनैगमनय से अशुद्ध भी कहा जाता है; उसीप्रकार जो जीव निगोद से निकलकर आत्मभान करके मुक्त होने वाला हो, उसको वर्तमान में विकार होने पर भी भविष्य की शुद्धता का वर्तमान में आरोप करके शुद्ध कह सकते हैं।

स्वभावदृष्टि से तो सभी जीव शुद्ध ही हैं और ऐसी दृष्टि से अपनी अशुद्धपर्याय टलकर आंशिक शुद्धदशा प्रकटेगी तथा पूर्ण शुद्धता प्रकट होगी। वहाँ वर्तमान में अल्प विकार है, उसका भावी नैगमनय से निषेध करके वर्तमान में भी शुद्ध हैं ह्न ऐसा कहा जाता है। वर्तमान में विकार भाव का परिणमन होने पर भी वे जीव भावी नैगमनय से अभी शुद्ध हैं और सिद्ध भगवन्तों के वर्तमान में विकार का परिणमन न होने पर भी भूतनैगमनय के बल से वे अभी अशुद्ध हैं-ऐसा भी कहा जा सकता है।

प्रश्न : सिद्ध की आत्मा को पूर्व की अशुद्धपर्यायपने देखने का फल क्या ?

उत्तर : सिद्ध के पहले निगोद पर्याय थी ह्न ऐसा जिसने देखा उसने त्रिकाली द्रव्य को देखा। सिद्ध और निगोद ऐसी सभी पर्यायों को लक्ष में लेने पर द्रव्यदृष्टि हो जाती है ह्न यही उसका फल है।

विकार एक समय का है, वह स्वभाव में नहीं है; इसप्रकार दोनों को जानने का तात्पर्य तो द्रव्यदृष्टि है। त्रिकालीस्वभाव और क्षणिकविकार ह्न इन दोनों को जब जाना, तब जीव स्वभाव की तरफ ढले बिना रहता नहीं।

पर्यायार्थिकनय विकार को भी जानता है; किन्तु द्रव्यदृष्टि में विकार है ही नहीं। द्रव्यदृष्टि में तो एक शुद्ध चिदानन्द आत्मा ही है। ऐसे भान से जिसने अपनी पर्याय में श्रद्धा-ज्ञान को शुद्ध किया है और जो भविष्य में पूर्ण शुद्धता करने वाला है, वह जीव भावी नैगमनय से ऐसा कहता है कि - मैं शुद्ध हूँ, द्रव्य से भी शुद्ध और पर्याय से भी शुद्ध।

जिसप्रकार निगोद का जो जीव भविष्य में मुक्ति पाने वाला है, उसे अभी मुक्त कहकर त्रिकाली द्रव्य को दिखाया है; उसीप्रकार सिद्ध का आत्मा पहले संसार पर्याय में था ह्न ऐसा कहकर उस आत्मा के भी त्रिकालीपने का लक्ष कराया है। इसप्रकार दोनों नयों से सबको देखने को कहा ह्न इन नयों के फल में वीतरागता आती है।

जिसको सम्यग्ज्ञान हुआ हो, नय उसी को होते हैं। नय सम्यक् श्रुतज्ञान में ही होते हैं। जिसे त्रिकाली द्रव्य और पर्याय दोनों का ज्ञान हुआ हो, उसी को नय होते हैं। इन नयों को जानने का फल वीतरागता है। त्रिकालशुद्ध का आदर करके क्षणिक विकार के प्रति उदासीन होना ह्न यही दोनों नयों का फल है।

इसीप्रकार आचार्य अमृतचन्द्रसूरि ने श्री समयसार की आत्मख्याति टीका के चौथे श्लोक में कहा है ह्न ''दोनों नयों के विरोध को नष्ट करनेवाले स्यात् पद से अंकित जिनवचन में जो पुरुष रमते हैं, वे स्वयमेव मोह का वमन कर डालते हैं तथा अनूतन (अनादि) और कुनय के पक्ष से खण्डित नहीं होनेवाली उत्तम परम ज्योति/समयसार को शीघ्र ही देखते हैं।''

निश्चयनय कहता है कि मैं त्रिकालशुद्ध हूँ। व्यवहारनय कहता है कि वर्तमान में विकार भी है। विकारपने विकार है और त्रिकाली स्वभावपने विकार नहीं है। त्रिकाली स्वभावपने स्वभाव है और विकारपने स्वभाव नहीं है ह्न इसप्रकार अनेकान्त है। निश्चयनय कहता है कि अशुद्धता नहीं है, व्यवहार कहता है कि अशुद्धता है; परन्तु जिनवचन उनका विरोध दूर कर देते हैं। यथा, निश्चयनय से स्वभाव में

त्रिकाल शुद्धता है; पर्यायनय से एक समय की अशुद्धता भी है; किन्तु वह अशुद्धता मेरे स्वभाव में नहीं है।

निमित्त है, व्यवहार है; किन्तु उनके आश्रय से मेरा ज्ञान नहीं है। व्यवहार करते-करते निश्चय हो जायेगा ह्न ऐसा माने तो एकान्त है। जो जीव शुद्धस्वभाव और विकारह्न दोनों को जानकर स्वभाव की तरफ ढलते हैं, वे ही जिनवचन में रमण करते हैं और स्वयमेव मोह का वमन कर डालते हैं। उनके मोह का उत्पाद ही नहीं होता; अत: मोह का वमन कर डाला ह्न ऐसा शास्त्र में कहा गया है।

निश्चय के आश्रय से भी धर्म होगा और व्यवहार के आश्रय से भी धर्म होगा ह्न ऐसा यदि माने तो उसने दोनों नयों को ही नहीं माना, वह तो एकान्ती है। पुण्य को पुण्य रूप में ही स्थापित करके उससे धर्म न माने, तभी उसके दोनों नय रह सकते हैं।

त्रिकाल स्वभाव शुद्ध है तथा क्षणिक पर्याय में विकार है ह्न ऐसा दोनों नयों से जानकर जो शुद्धचैतन्यस्वभाव की ओर ढलता है, वह अन्दर में अनूतन अर्थात् अनादि और कुनय के पक्ष से खण्डित नहीं होने वाली उत्तम परमज्योति को शीघ्र ही देखता है। **(क्रमश:)**

एकमात्र यही उपाय है

आचार्य भगवन्तों का एकमात्र यही आदेश है, यही उपदेश है, यही सन्देश है कि सम्पूर्ण जगत से दृष्टि हटाकर एकमात्र अपने आत्मा की साधना करो, आराधना करो, उसे ही जानो, उसे ही पहिचानो, उसी में जम जावो, उसमें ही रम जावो, उसमें ही समा जावो, इससे ही अतीन्द्रियानन्द की प्राप्ति होगी। परमसुखी होने का एकमात्र यही उपाय है।

पर को छोड़ने के लिए, पर से छूटने के लिए इससे भिन्न कुछ भी करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि पर तो छूटे हुए ही है। वे तेरे कभी हुए ही नहीं है, तूने ही उन्हें अज्ञानवश अपना मान रखा था, अपना जान रखा था और उनसे राग कर व्यर्थ ही दु:खी हो रहा था। तू अपने में मगन हुआ तो वे छूटे हुए ही हैं।

बारह भावना : एक अनुशीलन, पृष्ठ : 121

छहढाला प्रवचन

रे जीव ! सुन, यह तेरे दुःख की कथा

बध बंधन आदिक दुःख घने, कोटि जीभ तें जात न भने।
अति संक्लेश भाव तें मर्यो, घोर श्वभ्रसागर में पर्यो।।८।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे ...)

तिर्यंचगति में एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक के जीवों के दुःख का थोड़ा-सा वर्णन किया; क्योंकि कथन में पूरा नहीं आ सकता; अतः उसका उपसंहार करते हुए कहते हैं कि ह्न अरे ! अज्ञान से पशुपर्याय में वध-बंधन एवं अन्य बहुत प्रकार के जो दुःख जीव ने सहन किये, उनका वर्णन कैसे किया जाए ? करोड़ों जीभ से भी वह दुःख कहा नहीं जा सकता।

यहाँ शारीरिक स्थूल दुःखों का कुछ कथन किया है; अन्य हजारों तरह के मानसिक दुःखों की जो तीव्र पीड़ा है, वह तो वचन से कही ही नहीं जा सकती ? ऐसे बहुत दुःखों को भोग कर अन्त में अत्यन्त संक्लेश भावपूर्वक कुमरण किया और पाप की तीव्रता के कारण नरक के घोर दुःख सागर में जा पड़ा।

यद्यपि, सभी पंचेन्द्रिय तिर्यंच नरक में ही जायें - ऐसा कोई नियम नहीं है। वे चार गति में से किसी भी गति में जा सकते हैं; परन्तु यहाँ उनकी बात है जो तीव्र पाप परिणाम करके नरक में जाते हैं; क्योंकि यहाँ तो यह दिखलाना है कि जीव ने कैसा-कैसा दुःख भोगा है ? तिर्यंच के दुःखों के बाद अब नरक के दुःख दिखाते हैं। शास्त्रों में सुख और दुःख दोनों का उत्कृष्ट स्वरूप दिखाया है; उसे जानकर दुःख से छूटने का व सुख की प्राप्ति का उद्यम करना चाहिए। अज्ञान से संसार में जीव कितना दुःखी हो रहा है ह्न इसका भी ख्याल जिसे न हो, वह जीव उस दुःख से छूटने का उपाय क्यों करेगा ? दुःख से छूटने का जिनको विचार ही नहीं, सुखी होने की जिनको जिज्ञासा ही नहीं ह्न ऐसे जीवों के लिए यह बात नहीं है; किन्तु

जिनके हृदय में ऐसा प्रतिभास हो कि मैं बहुत दुःखी हूँ और उससे छूटना चाहता हूँ ह्न ऐसे दुःख से छूटकर सुखी होने की पिपासा जिनके अन्तर में हुई हो ह्न ऐसे जीवों के लिए सन्तों का यह उपदेश है।

रे जीव ! अज्ञान के कारण अनादि से दुःख भोगते हुए तुझे संसार का कोई भी दुःख भोगना बाकी नहीं रहा। मैं कौन हूँ ? मेरा सच्चा रूप कैसा है? मैं दुःखी हूँ या सुखी ? दुःख से छूटने और सुखी होने के लिए मुझे क्या करना चाहिए? किसको छोड़ना व किसको ग्रहण करना चाहिए? ह्न इसके विचार-विवेक बिना जीव संसार में दुःखी हो रहा है। श्रीमद् राजचन्द्रजी ने १६ वर्ष की उम्र में गुजराती में लिखा था कि ह्न

मैं कौन हूँ ? आया कहाँ से ? और मेरा रूप क्या ?
सम्बन्ध दुःखमय कौन है ? स्वीकृत करूँ परिहार क्या ?
इसका विचार विवेक पूर्वक शान्त होकर कीजिये।
तो सर्व आत्मिक ज्ञान के सिद्धान्त के रस पीजिये।।

अरे, विचारशक्ति मिली है तो भी जीव विचार नहीं करता और धधकती आग में पकते हुए शकरकंद की तरह दुःखाग्नि में सेका जा रहा है। दुःख की ज्वाला में जल रहा है तो भी मूरख को दुःख नहीं दिखता। जरा-सा अपमानादि होने पर क्रोध की ज्वाला भभक जाती है। अरे जीव ! यह तुझे शोभा नहीं देता। तू जाग...जाग ! धर्म के बिना तेरे जीवन का कोई मूल्य नहीं। कीड़ा, चींटी आदि के अनन्त अवतारों में आज तक धर्म के बिना ही जीवन पूरा होता रहा; वहाँ रंच मात्र भी दुःख नहीं मिटा तो फिर धर्म के बिना मनुष्य-अवतार में कौन-सा फर्क पड़ जायेगा ? भाई ! धर्म के बिना तेरा दुःख कभी भी मिटनेवाला नहीं है।

धर्म के बिना सुख कैसे हो ? किसी भी तरह नहीं हो सकता। बिना धर्म के जीव को कैसे-कैसे दुःख भोगने पड़ते हैं, उसका यह कथन है। जैसे राम वगैरह का लम्बे समय का जीवन तीन घंटे के नाटक में दिखला देते हैं, वैसे ही इस आतमराम

(शेष पृष्ठ - 29 पर)

संपूर्ण देश में धार्मिक शिविरों की धूम

1. कोटा (राज.) : श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल, कोटा के तत्त्वावधान में श्री कुन्दकुन्द कहान मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट द्वारा दि. 10 से 19 जून तक ग्रुप शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में कोटा के अतिरिक्त हाड़ौती, मेवाड एवं मध्यप्रदेश के कुल 34 स्थानों पर विविध धार्मिक कक्षाओं से लगभग 2500 बालक-बालिकायें लाभान्वित हुये।

शिविर में बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद, पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा, पण्डित कमलजी जबेरा, पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर, पण्डित संजयजी शास्त्री भैसरोड़गढ़, पण्डित मनीषजी शास्त्री पिड़ावा, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री जयपुर, पण्डित प्रयंकजी शास्त्री रहली एवं विदुषी राजकुमारी बेन जयपुर के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला।

इसी शृंखला में श्री दिगम्बर जैन बाल विकास पारमार्थिक न्यास कोटा के तत्त्वावधान में15 वाँ जैन दर्शन एवं व्यक्तित्व विकास शिविर 11 से 15 जून तक आयोजित किया गया। शिविर का उद्घाटन श्री सुरेन्द्रजी जैन (राहुल ट्रांसफार्मर) ने किया।

शिविर में पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर व पण्डित राकेशजी शास्त्री दिल्ली के प्रवचन एवं कक्षाओं का लाभ मिला। श्रुतपंचमी के अवसर पर बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' के प्रासंगिक प्रवचन का लाभ भी उपस्थित जन समुदाय को मिला।

इस अवसर पर पण्डित सचिनजी शास्त्री एवं पण्डित निकलंकजी शास्त्री ने सर्वश्री अमितजी, समकितजी, समीरजी एवं विरागजी के सहयोग से बाल कक्षायें ली। शिशुवर्ग की विशेष कक्षायें ब्र. नीलिमाजी, श्रीमती संगीताजी, श्रीमती अलकाजी व कु. श्रुति जैन ने ली।

2. स्तवनिधी (बेलगाँव-कर्ना.) : यहाँ श्री पार्श्वनाथ ब्रह्मचर्याश्रम गुरुकुल में अध्ययनरत लगभग 450 बालकों में जैनशिक्षा एवं नैतिक संस्कारों का बीजारोपण हो इस उद्देश्य से प्रथम बार ही दिनांक 4 से 14 जून 07 तक बाल संस्कार शिविर का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर ब्र. यशपालजी जैन जयपुर द्वारा जिनधर्म प्रवेशिका की सामूहिक कक्षा ली गई। जिसमें द्रव्य-गुण-पर्याय एवं छह सामान्य गुणों के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी दी गई।

दोपहर एवं सायंकालीन सत्र में कक्षा 5 से 9 वीं तक के छात्रों के लिए बालबोध पाठमाला भाग-1,2 व 3 की कन्नड़ एवं मराठी भाषा में संचालित 10 कक्षायें पण्डित जिनचन्दजी आलमान हेरले, पण्डित सुधाकरजी शास्त्री इण्डी, पण्डित जितेन्द्रजी राठी जयपुर, पण्डित अनिलजी आलमान हेरले, पण्डित अभिनन्दनजी पाटिल हेरले, पण्डित प्रसन्नजी शेटे कोल्हापुर, पण्डित अभिजीतजी अलगौंडर शेडबाल, पण्डित दीपकजी मजलेकर आलते एवं पण्डित सूरजजी पाचोरे नान्द्रे ने ली।

शिविर में अनेक धार्मिक प्रतियोगिताओं के अतिरिक्त कण्ठपाठ प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया; जिसमें 289 छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर अनेक विषयों को कण्ठस्थ किया। रात्रि में विद्यार्थियों के लिये कथावाचन का आयोजन पण्डित जितेन्द्रजी राठी ने किया।

दिनांक 14 जून को आयोजित परीक्षा में 345 छात्रों ने उपस्थिती दर्ज कराई। उत्तीर्ण समस्त छात्रों एवं कण्ठपाठ प्रतियोगियों को श्रीमती इन्दुमती अण्णासाहेब खेमलापुरे, घटप्रभा की ओर से लगभग 11 हजार रुपयों के पुरस्कार वितरित किये गये। संपूर्ण शिविर में गुरुकुल के ट्रस्टी श्री अभयजी अथणे, संचालक श्री बी.आर. चौगुले एवं अन्य कार्यकर्ताओं तथा सर्वोदय स्वाध्याय समिति, कोल्हापुर का सक्रिय सहयोग प्राप्त हुआ।

शिविर खर्च हेतु श्रीमती लता विपिन गाला मुम्बई की ओर से 20 हजार तथा श्रीमती गीताबेन गाँगजी गाला की ओर से 5 हजार रुपये की दानराशि प्राप्त हुई।

3. भोपाल (म.प्र.) : यहाँ श्री डालचन्द कमलश्री बाई दि. जैन सार्वजनिक न्यास, भोपाल द्वारा संचालित 1008 श्री सीमंधर जिनालय में वेदी प्रतिष्ठा के नववें वार्षिकोत्सव पर दिनांक 3 से 10 जून 07 तक बाल एवं युवा संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में ब्र. सत्येन्द्रजी मौ, पण्डित कमलेशजी मौ, पण्डित महेन्द्रजी खनियांधाना, पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल, पण्डित राजीवजी शास्त्री भिण्ड, ब्र. अमितजी मोदी विदिशा, पण्डित श्रेणिकजी जबलपुर एवं ब्र. नन्हेभाई सागर के प्रवचन व कक्षाओं का लाभ मिला।

इसी शृंखला में बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री के कुशल निर्देशन में दि. 12 जून से 17 जून 07 तक कल्पद्रुम महामण्डल विधान एवं आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें डॉ. उत्तमचन्दजी सिवनी, डॉ. नरेन्द्रजी शास्त्री जयपुर एवं विदुषी श्रीमती पुष्पाजी जैन खण्डवा के आध्यात्मिक प्रवचनों का लाभ मिला।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ, पण्डित सुनीलजी धवल एवं पण्डित कान्तिकुमारजी इन्दौर ने सम्पन्न कराये।

दिनांक 17 से 22 जून 07 तक श्री दि.जैन मुमुक्षु मण्डल चौक मन्दिर में ब्र. यशपालजी जैन जयपुर द्वारा मोक्षमार्ग की पूर्णता विषय पर मार्मिक प्रवचन हुये। साथ ही दिनांक 20 जून को आपका एक प्रवचन पिपलानी जैन मुमुक्षु मण्डल में भी हुआ। **ह्न हेमचन्द जैन 'हेम'**

4. कानपुर (उ.प्र.) : श्री दि. जैन आ. कुन्दकुन्द स्मारक सर्राफा एवं अ. भा. जैन युवा फैड.,कानपुर द्वारा दि. 27 मई से 3 जून तक सप्तम ग्रुप शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में मंगलायतन से पधारे पण्डित सौधर्म जैन, पण्डित अभिषेक जैन, पण्डित अकलंक जैन, पण्डित शालीन जैन एवं स्थानीय विद्वान पण्डित अनुभवप्रकाशजी शास्त्री कानपुर, पण्डित अनिलजी धवल, पण्डित दीपकजी धवल की उपस्थिति रही। **ह्न आलोककुमार जैन**

5. **बीजापुर (कर्ना.) :** यहाँ श्री सहस्रफणी पार्श्वनाथ दि. जैन अतिशय क्षेत्र में श्री डी.आर. शहा के प्रयत्नों से दिनांक 30 मई से 5 जून तक शिक्षण शिविर का आयोजन हुआ।

शिविर में ब्र. यशपालजी जैन जयपुर द्वारा जिनधर्म प्रवेशिका तथा पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर द्वारा छहढाला की कक्षा एवं प्रवचनों का लाभ मिला।

6. **गुना (म.प्र.) :** यहाँ श्री दि. जैन मुमुक्षु मण्डल के तत्त्वावधान में 1 से 10 जून तक अ.भा.जैन युवा/महिला फैडरेशन द्वारा षष्टम शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित रमेशचन्दजी शास्त्री जयपुर, पण्डित सुरेन्द्रकुमारजी उज्जैन, पण्डित अध्यात्मजी शास्त्री, विदुषी सुधा जैन उज्जैन, कु. स्वाति जैन जयपुर एवं कु. दीप्ति जैन खनियांधाना आदि के माध्यम से धर्म प्रभावना हुई।

प्रतिदिन गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के उपरान्त पण्डित राजकुमारजी शास्त्री के मांगलिक प्रवचन हुये तथा विविध बाल कक्षायें संचालित की गई। शिविर पण्डित सुरेशचन्दजी शास्त्री के निर्देशन एवं स्थानीय विद्वानों के सराहनीय सहयोग से सम्पन्न हुआ।

7. **अजमेर (राज.) :** यहाँ श्री वीतराग विज्ञान स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में दिनांक 19 जून से 27 जून तक 17 वें बाल व युवा चेतना शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा द्वारा प्रवचनसार व रत्नकरण्ड श्रावकाचार के आधार से युवा एवं प्रौढ़ कक्षा ली गई। साथ ही पण्डित अनुभव जैन व पण्डित वैभव जैन मंगलायतन ने पूजन व्यवहार सम्बन्धी सामान्य ज्ञान कराया।

शिविर में सी.डी प्रवचन, जिनेन्द्र भक्ति, कक्षाओं व सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से लगभग150 शिविरार्थियों ने धर्मलाभ लिया। समापन के अवसर पर भव्य रैली निकाली गई।

अन्तिम दिन शिविरार्थियों की परीक्षा लेकर उत्तीर्ण छात्रों को पुरस्कृत किया गया।

8. **बेलगाँव (कर्ना.) :** यहाँ **श्री सन्मति विद्या मन्दिर, सिदनाल** एवं **क्षुल्लिका पार्श्वमति कन्या विद्यालय, अक्कोल** में दिनांक 5 से 12 जून 2007 तक हाईस्कूल के छात्रों के लिये शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में पण्डित जितेन्द्रजी राठी, जयपुर द्वारा दोनों स्थानों के जैन-अजैन समस्त विद्यार्थियों को जैन धर्म एवं नैतिक शिक्षा का स्वरूप विशद रीति से समझाया गया। इसी के अन्तर्गत सिदनाल विद्यालय में आयोजित शाकाहार प्रतियोगिता में 112 छात्रों ने भाग लिया। समस्त छात्रों को पुरस्कार वितरण श्रीमती इन्दुमती अण्णासाहेब खेमलापुरे, घटप्रभा द्वारा किया गया।

दिनांक 12 जून को समापन समारोह के अध्यक्ष ब्र. यशपालजी जैन ने विद्यार्थियों को महाविद्यालय में आने की प्रेरणा एवं गुरुकुल प्रणाली के प्रणेता मुनिश्री समन्तभद्र महाराज का परिचय दिया। विद्यालय के 350 छात्रों ने जैनशिक्षा प्राप्त की।

9. **जयपुर (राज.) :** यहाँ माल. नगर से.17 स्थित श्री पार्श्व.जैन मंदिर मे 8 वें बाल संस्कार शिविर का आयोजन दिनांक 7 से 19 जून तक श्री नथमलजी झांझरी द्वारा किया गया।

शिविर में पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ़, पण्डित संजयजी सेठी जयपुर एवं श्रीमती ज्योतिजी सेठी जयपुर की कक्षाओं के अतिरिक्त पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर तथा पण्डित प्रमोदजी शास्त्री शाहगढ़ के प्रवचनों का लाभ मिला।

दिनांक 18 जून को सभी विद्यार्थियों की परीक्षा लेकर दिनांक 19 जून को आयोजित समापन समारोह में उत्तीर्ण समस्त परीक्षार्थियों को पुरस्कार वितरीत किये गये।

10. **अशोकनगर (म.प्र.) :** यहाँ श्री मुमुक्षु मण्डल ट्रस्ट के तत्वावधान में अखिल भा.जैन युवा/महिला फेडरेशन द्वारा चतुर्थ बाल एवं संस्कार शिविर का आयोजन पण्डित श्री बाबूभाई मेहता फतेपुर के निर्देशन में दिनांक 24 से 29 जून 2007 तक किया गया। शिविर का उद्घाटन श्री छोगालालजी रमेशचंदजी राजपुर के करकमलों से किया गया।

इस अवसर पर पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा के प्रवचनों के साथ ही पण्डित विवेककुमारजी पिड़ावा, पण्डित सुमितकुमारजी जैन, पण्डित वैभवकुमारजी जैन, पण्डित अर्पितजी सिंघई व पण्डित आकाशजी बसन्त की कक्षाओं का लाभ भी मिला।

11. **ग्वालियर (म.प्र.) :** यहाँ श्री जैन नैतिक शिक्षा समिति द्वारा श्री दि. जैन स्वर्ण मन्दिर में दिनांक 22 से 30 मई, 07 तक 13 वाँ बाल शिक्षण शिविर आयोजित किया गया।

शिविर में पण्डित धनेन्द्रजी सिंघल ग्वालियर, पण्डित विनीतजी शास्त्री ग्वालियर, पण्डित अनुभवजी फिरोजाबाद, पण्डित प्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित अंकितजी जैन, पण्डित अंकुरजी जैन मंगलायतन द्वारा विभिन्न कक्षाओं का संचालन किया गया। सम्पूर्ण शिविर का संचालन सर्वश्री अनिलजी, रोहितजी एवं दीपेशजी ने किया। **ह्न राकेश जैन, नायक**

(पृष्ठ-25 का शेष...)

के अनन्तकाल के दुःखों की लम्बी कथा शास्त्रकारों ने संक्षेप में बता दी है।

भाई ! तिर्यंचपने में अज्ञान के कारण तुमने बहुत दुःख भोगे। वहाँ कोई छुरे से काटे, कोई भूखे-प्यासे बाँधे रखे, कोई पिंजरे में बन्द कर दे ह्न तिर्यंच अपने ऐसे दुःख किनसे जाकर कहें? बड़ी मछली छोटी मछली को खा जाती है; तन्दुल मच्छ - ऐसा क्रूर विचार करता है कि 'यदि मैं बड़े मुँह वाला होता तो इन सब मछलियों को खा लेता' ह्न ऐसे क्रूरभाव करके कुमरण से मरके नरक में जा पड़ते हैं। नरक के घोर दुःखों का कथन आगे करेंगे। **(क्रमशः)**

शिविर एवं वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न

उदयपुर (राज.) : यहाँ श्री दि. जैन मुमुक्षु मण्डल एवं श्री कुन्दकुन्द वीतराग-विज्ञान शिक्षण समिति द्वारा दि. 10 से 17 जून तक अष्टम बाल संस्कार शिविर का आयोजन हुआ।

शिविर में पण्डित वीरेन्द्रजी आगरा एवं पण्डित देवेन्द्रजी बिजौलिया के प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित कोमलचंदजी टड़ा, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, पण्डित अरुणजी अलवर, पण्डित संजयजी शाह लोहारिया एवं डॉ. ममताजी बाँसवाड़ा की कक्षाओं का लाभ मिला।

ज्ञातव्य है कि उदयपुर द्वारा इस वर्ष को छहढाला वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है; अत: सभी विद्वानों के प्रवचन एवं कक्षायें छहढाला पर ही संचालित हुई। दि. 13 जून को छहढाला विषयक गोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसका संचालन पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री ने किया। अंतिम दिन छहढाला पर आधारित संगीतमय नाटिका **संसार से लेकर मोक्ष तक** की प्रस्तुति दी गई।

दि. 17 जून को श्री चंद्रप्रभ चैत्यालय, मुखर्जी चौक के द्वितीय तल पर नवनिर्मित वेदी में धवल पाषाणमय श्री सीमंधरस्वामी की 39 इन्च प्रतिमा को श्री विजयजी कमलजी बड़जात्या द्वारा विराजमान किया गया। साथ ही आचार्यों के चरण एवं जिनवाणी स्थापना भी की गई।

शिविर में विद्यमान 20 तीर्थंकर विधान का आयोजन किया गया। शिविर एवं विधान के समस्त कार्य प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र.अभिनन्दनजी खनियांधाना, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बाँसवाड़ा एवं डॉ.महावीरप्रसादजी टोकर-उदयपुर के निर्देशन में सम्पन्न हुये।

आयोजन में स्थानीय विद्वान पण्डित भोगीलालजी, पण्डित खेमचंदजी, पण्डित हेमन्तजी, पण्डित जिनेन्द्रजी एवं पण्डित प्रक्षालजी का सहयोग प्राप्त हुआ।

हार्दिक बधाई !

1. श्री जैन विद्या संस्थान महावीरजी द्वारा आयोजित पत्राचार जैन धर्म दर्शन एवं संस्कृति सर्टिफिकेट परीक्षा 2006 में **श्रीमती ज्योति सेठी** ध.प. श्री संजयजी सेठी, जयपुर ने 87 प्रतिशत अंक प्राप्त कर मैरिट में प्रथम स्थान (गोल्ड मैडल) प्राप्त किया।

2. श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर के छात्रावास अधीक्षक **श्री धर्मेन्द्र शास्त्री** सुपुत्र श्री राकेशजी जैन बण्डा-सागर का विवाह **सौ. का. नेहा जैन** सुपुत्री श्री निर्मलचन्दजी जैन मण्डीबामौरा के साथ दिनांक 20 जून 2007 को सम्पन्न हुआ।

3. छिन्दवाड़ा निवासी **सौ.का.अनुभूति जैन** सुपुत्री श्री अजितकुमारजी जैन का विवाह जबलपुर निवासी **चि. नीलेश जैन** सुपुत्र श्री जयकुमारजी जैन के साथ दिनांक 27 जून 2007 को सम्पन्न हुआ। इस उपलक्ष्य में 101/- रुपये प्राप्त हुये।

वीतराग-विज्ञान द्वारा सभी को उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनायें ।

वैराग्य समाचार

1. **अशोकनगर (म.प्र.) निवासी श्री सुमेरचन्द मानोरिया** का 14 जून को 82 वर्ष की आयु में शांत परिणामों से देहावसान हो गया। आप विगत 40 वर्षों से गुरुदेवश्री के सदुपदेश से प्रभावित होकर तत्त्व की प्रभावना में तत्पर रहे। आपके प्रयासों से ही अशोकनगर में श्री कुन्दकुन्द दि. जैन स्वा. मंदिर ट्रस्ट के अंतर्गत जिनमंदिर, स्वाध्याय व पाठशाला भवन का निर्माण हुआ है। आपकी स्मृति में श्री राजेन्द्रजी एवं श्री प्रदीपजी मानोरिया द्वारा 1100/- रुपये प्राप्त हुए।

2. **कुरावड़ निवासी श्रीमती साईबाई** ध.प. स्व. जवानमलजी भोरावत का दिनांक 6 जून 07 को 88 वर्ष की उम्र में देहविलय हो गया। आप धार्मिक एवं स्वाध्यायी थीं। आपने गुरुदेवश्री के सानिध्य में कुरावड़ पंचकल्याणक में ब्रह्मचर्य व्रत लिया था । आपकी स्मृति में श्री भगवतीलाल भोरावत की ओर से 1000/- रुपये प्राप्त हुये।

3. **भोपाल (शक्तिनगर) निवासी श्री गुलाबचन्दजी जैन** का 26 जून 07 को हृदयाघात के कारण आकस्मिक देहविलय हो गया। आप अध्यात्मरसिक एवं स्वाध्यायी व्यक्ति थे। श्री दि. जैन मुमुक्षु मण्डल, पिपलानी (भोपाल) में आप नियमित प्रवचन करते थे। आपके निधन से मुमुक्षु मण्डल को गहरा आघात हुआ है। आपकी स्मृति में 502/- रुपये प्राप्त हुये।

4. श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महा. के स्नातक एवं वीतराग-विज्ञान (मराठी) के पूर्व प्रबन्ध सम्पादक पण्डित महावीरजी पाटील सांगली (महा.) के 22 वर्षीय युवा **सुपुत्र चि. सुनय पाटील** का दिनांक 5 जून को आकस्मिक देहावसान हो गया।

5. श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महा. के स्नातक पण्डित प्रवेशजी शास्त्री करेली के **दादा श्री शिखरचन्द जैन** (छीटापारा वालों) का 11 जून को शांत परिणामों से देहावसान हो गया। आप धार्मिक रुचिवन्त एवं स्वाध्यायी थे। आपकी स्मृति में 201/- रुपये प्राप्त हुये।

6. श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महा. के स्नातक पण्डित सचिनजी पाटनी कन्नड़ के **पिता श्री जयचन्दजी पाटनी** का दिनांक 14 जून को आकस्मिक देहावसान हो गया।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त करें ह्न यही भावना है।

श्री सिद्धचक्र विधान एवं शिविर सम्पन्न

बड़नगर (उज्जैन-म.प्र.) : यहाँ श्री दि. तेरापंथी बड़ा मंदिर, गाँधी चौक में 10 से 17 जुलाई 07 तक चि. आशीषकुमार अनिलकुमार पाटोदी परिवार द्वारा श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर ब्र.सुमतकुमारजी खनियांधाना, डॉ.उत्तमचंदजी जैन सिवनी, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बाँसवाड़ा, पण्डित अशोककुमारजी लुहाड़िया अलीगढ़, पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला।

मंगलमय महोत्सव की सम्पूर्ण विधि ब्र.जतीशचन्द्रजी शास्त्री के निर्देशन में पं. मनीषजी पिड़ावा, पण्डित सुनीलजी 'धवल' भोपाल, पण्डित सुबोधजी शाहगढ आदि ने कराई ।

विश्व का प्रथम प्राकृत वि. वि. बनाने की तैयारियाँ

श्रवणबेलगोला (कर्ना.) : विश्व प्रसिद्ध श्री क्षेत्र श्रवणबेलगोला में विश्व का प्रथम प्राकृत विश्वविद्यालय बनाने की तैयारियाँ जोर-शोर से जारी है। कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी के सत्प्रयत्नों से विश्व के प्रथम 'बाहुबली प्राकृत विश्वविद्यालय' का प्रस्ताव विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली को भेजा जा चुका है। श्रुतकेवली ऐजुकेशन ट्रस्ट ने इसके लिये भवन निर्माण का भी कार्य प्रारंभ कर दिया है।

इस विश्व विद्यालय में ९ विभाग होंगे, जिसमें ५० प्राध्यापकों की नियुक्ति की जावेगी। इन विभागों में प्राकृत, संस्कृत, पालि, अपभ्रंश, हिन्दी, कन्नड आदि भाषाओं के साहित्य में शोध एवं प्रकाशन का कार्य होगा। जैन धर्म-दर्शन, कला, इतिहास, पुरातत्त्व, गणित, आयुर्वेद, ज्योतिष आदि विषयों का शिक्षण भी विश्वविद्यालय में प्रस्तावित है।

छात्रवृत्तियाँ वर्ष : 2007-2008

भारत में मान्यता प्राप्त स्कूलों/कॉलेजों/प्रशिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत छात्रों के लिये योग्यता तथा कमजोर आर्थिक स्थिति के आधार पर चुने हुए छात्रों को दो श्रेणियों में छात्रवृत्तियाँ प्रतिवर्ष उपलब्ध कराई जाती हैं ह्न

(क) नॉन-रिफन्डेबल (वापिस न होने वाली) छात्रवृत्ति : नॉन-तकनीकी-उच्चतर माध्य, स्नातक व स्नातकोत्तर आदि शिक्षा के लिये 100/- रूपये से 300/- रूपये मासिक तक छात्रवृत्ति दी जाती है। जिन छात्रों को गत वर्ष छात्रवृत्ति दी गई थी, वे इस वर्ष पुन: आवेदन कर सकते हैं।

(ख) रिफंडेबल (वापिस चुकाई जाने वाली)ब्याज मुक्त ऋण के रूप में छात्रवृत्ति: तकनीकी इन्जीनियरिंग, कम्प्यूटर, मैडिकल, बिजनिस मैनेजमेंट व जैन दर्शन में अनुसंधान आदि पाठयक्रमों में उच्च शिक्षा के लिये 500 रूपये से 1000 रूपये मासिक तक छात्रवृत्ति दी जायेगी।

निर्धारित आवेदन-पत्र एक लिफाफे (9''ह्न4'') पर स्वयं का पता लिख कर और पाँच रूपये का डाक टिकट लगाकर भेजने से ही प्राप्त हो सकता है। पूरे विवरण सहित आवेदन पत्र कार्यालय में पहुँचने की अंतिम तिथि 31 अगस्त 2007 है। मंत्री(छात्रवृत्ति) जैन सोशल वेलफैयर एसोसिएशन, ई-9, ग्रीनपार्क एक्सटेन्शन, नई दिल्ली-110016

'सुदृष्टि तरंगिणी की तलाश'

कानपुर के एक मुमुक्षु भाई ने हमें शुद्धिकरण की हुई एक प्रति भेजी थी। उक्त प्रति मैंने किसी साधर्मी बन्धु को सलाह मशवरा प्राप्त करने हेतु दी थी। अब हमें याद नहीं आ रहा है कि वह प्रति वर्तमान में किन सज्जन के पास है। जिस किसी महानुभाव के पास हो कृपया शीघ्र हमें सूचित करने का कष्ट करें। जिससे प्रकाशन का कार्य संभव हो सके। **ह्न बसंत भाई दोशी (महामंत्री)**

श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट, १७३-१७५ मुम्बादेवी रोड, मुम्बई-०२

श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा
ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में

30 वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर

(रविवार, 05 अगस्त से मंगलवार, 14 अगस्त, 2007 तक)

अत्यन्त हर्ष के साथ सूचित कर रहे हैं कि श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर में रविवार, 05 अगस्त से मंगलवार, 14 अगस्त 2007 तक 30 वाँ बृहद् आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर का आयोजन अनेक विशिष्ट मांगलिक कार्यक्रमों सहित किया जा रहा है।

शिविर में अध्यात्मजगत के प्रसिद्ध प्रवक्ता बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल', तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, डॉ. उत्तमचन्दजी जैन सिवनी, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित शैलेषभाई शाह तलोद, पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. वीरसागरजी जैन दिल्ली, पण्डित सुनीलकुमारजी जैनापुरे राजकोट, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित मनीषजी शास्त्री खतौली, पण्डित प्रकाशचन्दजी छाबड़ा इन्दौर आदि अनेक विद्वानों का प्रवचन एवं कक्षाओं के माध्यम से लाभ मिलेगा।

साथ ही श्री टोडरमल दि. जैन सि. महा. के डॉक्ट्रेट (पीएच. डी. उपाधि प्राप्त) स्नातकों के व्याख्यानों का लाभ भी प्राप्त होगा।

शिविर के सम्पूर्ण कार्यक्रम बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा इन्दौर, पण्डित अमृतभाई मेहता फतेपुर एवं श्री महीपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा के कुशल निर्देशन में सम्पन्न होंगे।

इस मांगलिक प्रसंग पर आप सभी को धर्मलाभ लेने हेतु हार्दिक आमंत्रण है।

निवेदक

समस्त ट्रस्टीगण, श्री कुन्दकुन्द कहान दिग. जैन तीर्थ. ट्रस्ट, मुम्बई

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड

श्री टोडरमल स्मारक भवन

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राजस्थान)

ग्रीष्मकालीन परीक्षा - कार्यक्रम -2007

दिन व दिनांक	नाम ग्रन्थ
शनिवार 18 अगस्त 2007	1. बालबोध पाठमाला भाग1 (बालबोध प्रथम खण्ड) मौखिक 2. जैन बालपोथी भाग 1 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग1 (प्रवेशिका प्रथम खण्ड) 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग1 5. छहढाला (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) पूर्वार्द्ध 7. मोक्षमार्गप्रकाशक (पूर्वार्द्ध) 8. जैन सिद्धान्त प्रवेशिका (गोपालदासजी बरैया कृत) 9. विशारद प्रथम खण्ड (प्रथम वर्ष)
सोमवार 20 अगस्त 2007	1. बालबोध पाठमाला भाग 2 (बालबोध द्वितीय खण्ड) मौखिक 2. जैन बालपोथी भाग 2 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 2 (प्रवेशिका द्वितीय खण्ड) 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग 2 5. द्रव्यसंग्रह (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) उत्तरार्द्ध 7. लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका (सोनगढ़) 8. मोक्षमार्गप्रकाशक (उत्तरार्द्ध) 9. विशारद द्वितीय खण्ड (प्रथम वर्ष) 10. विशारद प्रथम खण्ड (द्वितीय वर्ष)
मंगलवार 21 अगस्त 2007	1. बालबोध पाठमाला भाग 3 (बालबोध तृतीय खण्ड) मौखिक 2. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 3 (प्रवेशिका तृतीय खण्ड) 3. रत्नकरण्ड श्रावकाचार (पूर्ण) 4. पुरुषार्थसिद्धयुपाय (पूर्ण) 5. विशारद द्वितीय खण्ड (द्वितीय वर्ष)

नोट - (1) सुविधानुसार परीक्षा का समय प्रात: 9 से शाम 5 बजे के बीच कभी भी सैट कर सकते हैं।

(2) जहाँ एक से अधिक केन्द्र हों, वे आपस में मिलकर समय निश्चित करें।

(3) किन्हीं विषयों के छात्र आपस में टकराते हों तो परीक्षा सुविधानुसार दिन में दो बार ली जा सकती है।

(4) बालबोध पाठमाला भाग 1, 2, 3 और जैन बालपोथी भाग 1 व 2 की परीक्षायें मौखिक में लेवें। शेष सभी विषयों की परीक्षायें लिखित में लेवें।